लेखक :

डॉ बलराम साहु

शिक्षा : एम्.भि.एस्.सि (भेटेरीनारि वाइरोलोजि)

पदवी :

ज्वाईंट डाइरेक्टर,

ओडिशा बायोलोजिकाल प्राडक्टस ईस्टीच्युट, भुवनेश्वर

पुस्तक रचना :

शरीररे समर सज्जा (ओडिआ)

जिन् पथे यात्रा (ओडिआ)

Science for our Children (Bacteria)

Science for our Children (Virus)

टिका दान (ओडिआ)

परिबेश गीति (ओडिआ)

मुक्ता महोत्सब (ओडिआ)

आम आखपाख (पत्रिका)

गोटिए जर्मानी गाईर दशदिन (ओडिआ)

(भ्रमण काहानी)

Pig Pastoralism in Odisha

Short Film :

Night Queen of Chilika

Youtube - www.nightqueen of chilika

by dr balaram sahu

पुरस्कार :

ओडिशा बिज्ञान अकादमी पुरस्कार - ୧୯୯୮

बिशिष्ट बैज्ञानिक पुरस्कार ୨୦୦୬

(ओडिशा कृषक समाज)

नेशनाल इनोवेसन फाउंडेसन आवार्ड - ୨୦୦୭

ओडिशा भेटेरीनारी कालेज गोलडेन जुबुलि आवार्ड - ୨୦୧୦

नेशनाल अवार्ड साइंस एण्ड टेक्नोलोजि कम्युनिकेसन (भारत सरकार) - ୨୦୧୧

www.pathepathshala.org

email : drbalarams10@gmail.com

Mob.: 9437290258

ओडिशा विज्ञान अकादमी पुरस्कार 1998

नेशनाल इनोवेसन फाउंडेंसन बेस्ट स्काउट आवार्ड 2007

नेशनाल आवार्ड फर बेस्ट साइंस एण्ड टेक्नोलोजि कम्युनिकेसन, भारत सरकार 2011

अगर आसपास पशु डाक्टर न हो...

(जलवायु परिवर्तन के अनुकूल गाय एवं अन्य पालतु पशुओं का पारंपरिक चिकित्सा)

डॉ बलराम साहु

पथे पाठशाला

CONTENTS

Subject	Page
१. मुहँ, खाद्यनाली की रोग	
• टिम्पानी (Tympany)	13
• दस्त (Diarrhoea)	16
• दस्त (Dysentry)	18
• चारा ना खाने से (Anorexia)	19
• दस्त (Diarrhoea) -2	22
• खुनी दस्त, गोबर के साथ खुन (Bloody Diarrhoea)	24
• बछड़ो में पतला दस्त (Dysentry)	26
• कब्ज / (Constipation)	28
• कृमि नाशक (Deworming)	30
• कॉलीक (पेट में पीड़ा) (Colic)	36
• पेट में गैस (Gas in stomach)	37
२. दांत, नाक, कान, के रोग	47
• दांत के मसुड़ों में पस (Pus in Dental Pad)	48
• नाक से खुन (Nasal Bleeding)	50
• आँख का लाल रंग (Conjuctivitis)	52
• आँख का लाल रंग (Conjuctivitis)-2	53
• कान में दर्द (Ootitis)	

३. प्रजनन सबंधी रोग	
• पशु गरम ना आने से (Anoestrus)	57
• पशु गरम ना आने से (Anoestrus) -2	59
• गाय की गरम ना आने से (आनीस्ट्रस, Anoestrus) -3	60
• गर्भपात -(आबर्सन, Abortion)	61
• जब गर्भ नाल (प्लास्टां) नहीं गिरता (Retention of Placenta)	63
• गाय की गर्भ नाल ना गिरने से (Retaition of Placenta) -2	64
• थनैला (मासटाइटिस, Mastitis)	65
• थनैला (मासटाइटिस, Mastitis)-2	67
• गर्भ परीक्षा (Pregnancy diagnosis)	68
४. छुत की बिमारी	
• एफिमराल ज्वर (Ephemeral Fever)	71
• तेज बुखार (High Fever)	72
• तेज बुखार-२ (High Fever-2)	73
• ठंडा, खांसी, बुखार (Cold, Cough, Fever)	75
• पेसाव में खुन (लाल रंग, कॉफी रंग की मुत्र, Red Urine)	76
• खुरहा-मुंहपका रोग (फूट एंड माउथ डिजीज) (FMD)-1	78
• खुरहा-मुंहपका रोग (फूट एंड माउथ डिजीज) (FMD)-2	80
• खुरहा-मुंहपका रोग (फूट एंड माउथ डिजीज) (FMD)-3	81

५. चर्म का रोग

- दाद, खाज, खुजली (Skin Disease) 85
- चिरा-फटा घाव (Lacerated wound) 87
- लासीरेसन, वृइस (Lacerated Wound) -2 88
- घाव में कीडे मकोड़े (Maggotted Wound) 89
- घाव में कीड़ा (Maggotted Wound)- 2 91
- टीक् और जुँ का संक्रमण (Tick & lice Infestation) 93
- टीक् और जुँ का सक्रंमण (Tick and Lice Infesation)-2 95
- शरीर की चमड़ी मे परजीवी का संक्रमण (Skin Parasitic Infection) 97
- टीक्, जुँ संक्रमण (Tick, Lice Infestaion)-3 98
- पशु की पुंछ में घाव (Gangrenous tail) 100
- चमड़ी एलर्जी (Skin Allergy) 101
- चमड़ी एलर्जी (Skin Allergy)-2 102
- फोड़ा (Tumor) 103
- चमड़ी के अन्दर खुन (Haematoma) 105

६. शरीर पीड़ा, हड्डी की समस्या

- बैल के कुड़/कंधा में पीड़ा (Pain in Hump / Shoulder) 109
- शरीर में पीड़ा (Body Pain) 110
- घुटने मैं पीड़ा (Knee Pain) 111

- हड्डी टुटने से (Bone Fracture) 112
- बीच्छू काटने का उपचार (Scorpion Bite) 113

७. दुध बढ़ाने का उपाय (Increase in milk yeild)

- दुध बढाने का उपाय (Incerease in milk yeild)-1 115
- दुध बढ़ाने का उपाय (Increase in milk yeild)-2 116
- दुध बढाने का उपाय (Increase in milk yeild)-3 117
- दुध बढाने का उपाय (Increase in milk yeild)-4 118
- दुध बढाने का उपाय (Increase in milk yeild)-5 119

८. स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक

- स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक (Health Tonic) 125
- पंचगव्य (Panchgavya) 126
- स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक (Health Tonic)-2 128
- बैल के लिए विशेष किव्वन टॉनिक (Special Fermented Tonic for Bullocks) 130

९. पीने का पानी का शुद्धिकरण

- पीने की पानी का शुद्धिकरण (Water Purification) 139

१०. मुर्गीयों के रोग का उपचार

- मुर्गीयों के रोगप्रतिरोधक क्षमता मे वृधि (Immunoboosting of Poultry Birds) 143

- मुर्गीयों में रानीखेत बीमारी (Ranikhet Disease of Polutry) 144
- मुर्गीयों में रानीखेत बीमारी की हर्बल नियंत्रण (Herbal Prevention of Ranikhet Disease) 146
- रानीखेत बीमारी की चिकित्सा (Herbal Treatment of Ranikhet Disease) 147
- जख्म सुखाने का उपाय (Wound Healing) 148
- मुर्गी में जुँ की नियन्त्रण (Lice Contol in Poultry) 151
- मुर्गी चेचक या फॉऊल पॉक्स (Fowl pox) 152
- मुर्गी के आंत पे कीड़ा (Intestinal worm) 154
- मुर्गीयों का जुकाम, सर्दी (Cold, Cough, Sneezing in Poultry) 155
- मुर्गीयों के आंत (Intestinal) में गोलाकार कृमि 156

११. साधारण

- सांप भगाने का हर्बल उपाय 161
- घर से सांप निकालने का सरल उपाय 162

१२. शब्दकोश 165

मुहँ, खाद्यनाली की रोग

१) टिम्पानी (ब्लोट)-पेट में गैस (Tympany)

"गैस में भरा पेट, स्वास में आया संकट
घिस खिलाके देखो पान पत्ता और अद्रक "

पेट में गैस भर जाता है जानवर का। ये बीमारी को अंग्रेजी में टिंपनी या ब्लोट बोला जाता है। ये बीमारी एक साधारण बिमारी होते हुए भी, बड़ा घातक हो सकता है। ज्यादा धान, चावल, बचा हुआ भात, दाल खाने से गाय में टिम्पनी होता है। पशु की पेट में गैस का निर्माण होता है। विभिन्न प्रकार् की गैस से लाकटिक एसिड़ (Lactic Acid), ब्युटीरीक एसिड़ (Butyric Acid), प्रापीओनीक एसिड़ (Propionic Acid) प्रमुख हैं। ये सब गैस टिम्पनी की कारण हैं। हमारा देश में ग्रामाचंल में किसान और पशु पालको ने टिम्पनी की इलाज् स्थानीय औषधीय पौधे, जड़ी बुटी से करते हैं और इसका सुफल भि पाते हैं। ये सब ज्ञान को पारम्परिक ज्ञान कौशल बोलते हैं। ये ज्ञानकौशल अभी भी इस्तेमाल किया जाता है। ये सब जड़ी बुटी से पान पत्ता और अदरख प्रमुख हैं। पान कि पत्ता में पाइपरीन (Piperene), पाइपरीडीन (Piperidine) और बालसामीक एसीड़ (Balsamic Acid) की तत्व हैं। अदरख में जीन्जीबरीन (Gingiberin), फिलान्ड्रीन (Philandrene), कोम्फेन (Compene) तत्व होते हैं। आजवाइन (Ajwain) में सिरोपटीन (Saeroptene), थाइमिन (Thymene) और थाइमल (Thymol) की तत्व होते हैं। ये सव तत्व गैस उत्पादन को कम करते हैं। पेट स्थित ग्रन्थिओं को उत्तेजित करते हैं। हजम करने में सहायक होते हैं।

बीमारी का लक्षण:

- पेट का फुल जाना, पेट सुजन।
- पेट बाहर आ जाता है ।

- आंख ओर नाक से पानी टपकते हैं।
- सांस लेने एवं छोड़ने में कष्ट की अनुभुति होती है।
- जानवर उठ बैठ करता रहता है। जानवर अपने पेट में पैर मारता है।

बीमारी का कारण:

- खाद्य में परिवर्तन होने से।
- ज्यादा भात, खिर, दाल खाने से।
- ज्यादा गैहुँ, बाजरा, धान खाने से ।
- ज्यादा घाँस, कुड़ा खानेसे।

बीमारी का चिकित्सा:-

(क) पान पता - ६-७

(ख) अदरख - ५०-१०० ग्राम

दोनो को अलग अलग पिस कर मिला जाता है। दोनो को मिला कर खिलाया जाता है। दो घंटे के अन्तर में खिलाया जाता है। (बछड़ा, बकरी, भेड़ को इसकी आधा खुराक दें।)

अदरख

पान पत्ता

- हिंग-२० ग्राम
- अद्रक - २० ग्राम
- काली मिर्च -१० ग्राम
- पिपल- २० ग्राम
- गुड़-२५ ग्राम

अदरख

हिंग

पिपल

काली मिर्च

गुड़

गुड़

सबको अलग अलग पिस कर मिलाया जाता है। दो घंटा या -३ घंटे की अन्तराल में दो बार खिलाया जाता है। (बछड़ा, बकरी, भेड़ को इसका आधी मात्रा खिलाया जाता है)

२) दस्त (डायरिया) (Diarrhoea)-1

"डायरिया जब हुआ पतला
प्याज और जिरा उसको खिला"

दूषित जल पान और अखाद्य खाने से डायरीया होता है। इससे पशु की शरीर से जल की कमी हो जाता है। पशु सुस्त हो जाता है। डायरीया की इलाज के लिए अनेक प्रकार की पारम्परिक उपाय इस्तेमाल किया जाता है। इसमे जिरा और प्याज का व्यवहार प्रमुख है। हमारे देश की कोने कोने में प्याज और जिरा का व्यवहार होता है, और इससे सफलता भी मिलता है। विज्ञान कि दृष्टि से जीरा में थाइमिन (Thymene) और थाइमल् (Thymol) के तत्व और भोलाटाइल आएल (Volatile oil) की उपस्थिति रहता है। ये सब तत्व पेट को उत्तेजित करते हैं और कारमीनेटीभ (Carminative) के हिसाब से काम करते हैं। पेट का सही इलाज हो जाता है और दस्त बन्द हो जाता है।

बीमारी का लक्षण:

- दस्त हुआ पतला, दुर्गंध युक्त होता है।
- बद् हजम खाद निकलता है
- पशु के शरीर मैं जल की कमी हो जाती है।
- पशु को प्यास लगती है
- पशु सुस्त हो जाता है।

बीमारी का कारण:-

- बद् हजमी
- वासी, खराब खाना खाने से
- खाद में फफुंद की उपस्थिति। बारीस के दिन मे जादा घास खाने से।
- कीटनाशक रसायन युक्त चारा खाने से
- दुषित पानी पिने से

बीमारी का चिकित्सा:-

(१) ❖ जिरा-२० ग्राम् (४ चामच)

❖ प्याज-४(४० ग्राम)

प्याज

जिरा

औषधी उपाय: दोनो को अलग अलग पिस कर मिला कर दिन में दो बार खिलाया जाता है। दो दिन में पशु का स्वास्थ्य ठीक हो जाता है।

(२) ❖ हरीद्रा (हरीताकी) (की चुर्ण) -९०० ग्राम

❖ दही-१०० ग्राम

हरीद्रा (हरीताकी)

दही

औषधी उपाय:-

पांच- छ: सुखा हरिद्रा (हरीताकी) को पिस् कर १००ग्राम् चुर्ण ले। उसमे १०० ग्राम् गाय या भैंस का दही मिलाया जाता है और पशु को खिलाया जाता है। तीन दिन तक एक दिन में दो बार खिलायें। बछड़ा, भेड़, बकरी को इसकी आधा मात्रा खिलाया जाता है।

३) दस्त (Dysentry-2)

"गुड़मारी पत्ता दही के साथ
डीसेन्ट्री के लीये बड़ा अब्यर्थ"

पशुओं मैं ड़ीसेनट्री की बीमारी दिखाई देता है। ये बारीस की दिन में ज्यादतर दिखाई देता है। इस की उपचार के लीये गुड़मार *(Gymnema Sylvestre)* की पत्ता, जीरा और दही के साथ दिया जाता है।

गुड़मार पत्ता में जोमनेमीक एसिड (Gymnemic Acid), फ्लाभोनोल (Flavonol), गुरमारीन (Gurmarin) तत्व रहता है। जीरा में थाइमिन (Thymene), दही में लाकटोबासीलस, आर्एनेज की एंजाइम रहते हैं। ये तत्व जीवाणु और वायरस विरोधी काम करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- दस्त
- बदबु की साथ दस्त

बीमारी का कारण:-

- दूषित पानी
- अशुद्ध खाद
- जीवाणु की संक्रमण

बीमारी की चिकित्सा:-

- गुड़मारी पत्ता-५० ग्राम
- जीरा- २० ग्राम
- दही- एक कटोरी

जिरा

दही

गुड़मार पत्ता

गुड़मारी पत्ता को पीस कर के जीरा की चुर्ण के साथ् मिला दिया जाता है। इस मिश्रण को दही के साथ मिलाकर तीन दिनों तक प्रत्येक दिन में दो बार दिया जाता है।

४) चारा ना खाने से (आनोरेक्सीआ, Anorexia)

"गाय जब चारा ना खाऐं
स्पेसल टनीक तभी बनाऐं।"

समय समय में पशुओं में चारा खाने की इच्छा कम दिखाई देता है। इस बीमारी को आनोरेक्सीआ के नाम से जाना जाता है। गाय, भैंस और बछड़ा में ये बीमारी अक्सर पाई जाती है। बुखार, कृमी होने से यह बीमारी होता है। बुखार, कृमि आदि की इलाज साधारण प्रकार कि घरेलु का उपयोग कर किया जा सकता है। घरेलु वस्तुओ में जीरा, हल्दी, अदरख, काली मिर्च मुख्य है। हल्दी में कुरकुमीन (Curcumin), टरमेरीक आँयल (Turmeric oil), अदरख मे जींजीन (Gingene), जींजीभरीन (Gingiverene), करेला की पत्ते में चीरान्टीन (Chirantene) आदि तत्व रहता है। काली मिर्च में पाइपारिन (Piperene) पाइपरिड़ीन (Piperedene) तत्व ठंडा, खासी को इलाज करती है। गुड़ खाद्य बर्धक होता है ओर सभी तत्व को शरीर के अंन्दर भेजता है। गुड़ को ट्रांसपोर्टर बोला जाता है।

बीमारी का लक्षण:

- चारा खाने की इच्छा में कमी
- बुखार आना।
- पशु चुपचाप रहता है।
- कभी कभी हलका सा दस्त होता है
- खाना से मुँह मोड़ लेता है

बीमारी का कारण

- जीवाणु संक्रमण

- बुखार
- कृमी
- खराब मौसम
- अधिक कार्यभार
- बैल को तनाव
- अत्यधिक दूर परिवहन के कारण

बीमारी का चिकित्सा

- चारा खाने का उपाय: एक स्वतन्त्र टॉनिक बनाया जाता है। इस टॉनिक को बनाने के लिए निम्नलिखित सामग्री:
- जीरा-२० ग्राम
- अदरख -२० ग्राम
- हल्दी -२० ग्राम
- काली मीर्च-२० ग्राम
- करेला का पत्ता -३ मूठी
- गुड़-५० ग्राम

अदरख

जिरा

करेला पत्ता

हल्दी

गुड़

काली मीर्च

औषधी उपाय:-

- जीरा, अदरख, हल्दी, काली मीर्च, करेला पत्ता और गुड़ को अलग उलग पिसा जाता है।
- सभी पिसी गई सामग्री को मिलाकर बॉल्स बनाया जाता है।
- इस बॉल्स को दिन में एकबार दो दिन तक खिलाया जाता है।
- इस टॉनीक को सभी या गर्भवती पशुओं को भी खिलाया जा सकता है।

५) दस्त (डायरिया, Diarrhoea) -2

"अनेक दिन से दस्त चालु
हरीताकी चुर्ण और दही पियाउ"

दस्त को अंग्रेजी में डायरिया (Diarrhoea) कहा जाता है। पतला दस्त की वजह शरीर से जलीय अंश की कमी होता है। पशु कमजोर हो जाता है। उठ नहीं पाता। इसके कारण पशु निस्तेज (Inactive) हो जाता है। इसलिये पहले गुड़ और नमक की पानी पिलाया जाना चाहीए। इसी से शरीर से निकला हुआ सोड़ियम की पुर्ति हो जाता है । और शरीर को ग्लुकोज मिलता है। हरीद्रा (हरीताकी) में चेबुलीन (Chebulin), चेबुलीक एसीड (Chebulic Acid), मालिक एसीड (Malic Acid), आलेजीक एसीड (Allegic Acid), आन्थ्राक्वीनोन (Anthraquinone), और दही में आरएनएज एंजाइम होता है। दोनो ही तत्व वाइरस नासक और जीवाणु नासक होते हैं।

बीमारी की लक्षण:-

- पशु में लगातर डायरिया / दस्त का होना
- पशु निस्तेज, शरीर दुर्बल
- शरीर में पानी की कमी होने सह पशु उठ नहीं पाता है।
- खाने पीने में रुची कम जाती है।
- लगातर डायरिया से शरीर में जल की कमी होने से मौत भी हो जाती है।

बीमारी का कारण:-

- जीवाणु, वाइरस से संक्रमण।
- सड़ा हुआ खाना खाने से।
- फंकुद या चम्त युक्त खाद्य ज्यादा खाने से
- बरसात के दिनों में ज्यादा घास खाने से
- जहरीला पेड़ की पत्ता खाने से
- दुषित पानी पीने से

बीमारी का चिकित्सा:-

- ९०० ग्राम् हरीद्रा (हरीताकी) की चुर्ण (हरीद्रा की बाहय आबरण की चुर्ण)
- आधा कटोरी दही

दही

हरीद्रा (हरीताकी)

ओषधी उपाय:

हरीद्रा (हरीताकी) की चुर्ण और दही दोनो को मिलाके दिन मे दो बार खिलाना चाहीए। इसी तरह तीन दिन खिलाने से दस्त बन्द हो जाता है।

ये औषधी को गर्भवती गाय, पशु को भी दे सकते हैं।

५) खुनी दस्त, गोबर के साथ खुन (ब्लडी डायरिया, Bloody Diarrhoea)

"खुन जब आये गोबर के साथ
गुंज पत्ता को लगाये हाथ"

पशुओं के मल में कभी कभी खुन दिखाई देता है। फिर कभी कभी डायरिया और खुन साथ में दिखता है। गर्मियों के दिनों में पानी की कमी अथवा दुषित पानी मिलने के कारण डायरिया की संभावना बढ़ जाती है। अधीक दिनों तक खुनी डायरिया होने से एनीमीया या खुन की कमी हो जाती है। जीवाणु संक्रमण के कारण कभी कभी बुखार आ जाता है। इसके लिए गुंज का पत्ता का उपयोग एक अच्छा इलाज है।

गुंज की हरा पत्ता में आब्रीन (Abrine), आब्राइन (Abraine), ग्लुकोसाइड़ (Glucoside) और आब्रालीन (Abraline) नामक तत्व पाए जाते है। ये जीवाणु नाशक है और डायरिया को बन्द करती है। खून निकलना बन्द हो जाता है।

बीमारी का लक्षण:-

- गोबर मैं खुन का आना
- गोबर मैं नाला (Mucous)
- कभी कभी गोबर के साथ जमाट हुआ खुन दिखाइ देता है।
- खाने के इच्छा में कमी
- शरीर दुर्बल हो जाना
- खुनी दस्त

बीमारी का कारण:-

- दुषित पानी पिने से
- गर्मियों के दिन
- जंगल कि विशाक्त चारा खाने से

गुंज

गुंज की पत्ता

बीमारी का चिकित्सा:-

सफेद गुंज की पत्ता से दो मुठी हरा पत्ता पीस कर एक कप दुध को साथ मिलाकर पिलाया जाता है। इसको दिन में दो बार तीन दिनों तक पिलाया जाता है।

(६) बछड़ा में पतला दस्त (डायरिया, ड़ीसेन्ट्री, Dysentry)

"डायरिया, दस्त बछड़ा को आये
अमरुल पता को पिस खीलाये"

बारिश के दिन में गाय, भैंस के बछड़ा को डायरिया होता है। दुषित पानी, घास खाने से डायरिया दिखाई देता है। ज्यादा खाने से डायरिया दिखाई देता है। ज्यादा खाने से डायरिया ज्यादा दिन तक चलती है। इसका इलाज के लिए अमुरल की पत्ता का इस्तेमाल किया जाता है। अमरुल की पत्ता में एसेनसीयाल आयल (Essential oil), इयुगेनाल (Eugenal), रेसिन (Resin), और भोलाटाइल आयल (Volatile oil) आदि तत्व रहते हैं। ये सब तत्व जिवाणु नाशक के रुप में काम करते हैं। आंतनली की अंदर पानी की शोसण हो जाता है। पतला दस्त बन्द हो जाता हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- दस्त, कभी कभी बुखार
- पशु सुस्त हो जाता है।
- पशु खाना बन्द कर देता हैं
- शरीर में सुष्कता दिखाइ देता है।

बीमारी का कारण:-

- पेट में कृमी
- दुषित पानी
- जीवाणु संक्रमण

बीमारी का चिकित्सा:-

- सफेद बच -२ ग्राम
- सोंठ- १० ग्राम
- अमरुद की पत्ता- ३ मुठी

अमरुद की पत्ता

सोंठ

सफेद बच

बच की जड

उपर्युक्त सामग्री को अलग-अलग पिस करके मिला कर दिन में दो बार पशुओं को तीन दिन तक खिलाएं।

८) कब्ज / (कानष्ट्रीपेसन, Constipation)

"कठीन हुआ जब गाय की गोबर
अरंड़ी का तेल है उपचार"

पशुओं में कब्ज या कोनष्ट्रीपेसन कभी कभी हो जाता है। यह बीमारी घर में खिलाए जाने वाले गाय और बैल को होता है। चरने वाले गाय, पशुओं में यह बीमारी कम होती है। इस बीमारी का चिकित्सा के लिए गरम दुध और कैस्ट्रॉल आँयल (Castor Oil) की इस्तेमाल किया जाता हैं।

कैस्ट्रॉल आँयल (अरंड़ी के तेल) में रेसिनीन (Recinin), टक्सआलबुमीन (Toxalbumin) और रिसीन (Ricin) तत्व रहता है। ये सब तत्व आंतनली को पिछली करण (Soothening) करता हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- मल नही निकलता है
- कब्ज होना
- पशु में चारा खाने की इच्छा में कमी
- पशु शुस्त रहता।

बीमारी का कारण:-

- पानी नहीं पिने से
- चारा की अनियमितता
- आहार खाने के बाद पानी नहीं पिने से
- गर्मी के दिनों में
- बुखार

बीमारी का चिकित्सा:-

- अरंड़ी का तेल -२०० ग्राम
- गाय की दुध-२०० एम्एल् ।

कैस्ट्रॉल आँयल

अरंड़ी

दुध

दोनो को मिलाकर हल्का गर्म करके पिलाएं एवं तीन घंटे के बाद फिर एक बार पिलाएं।

९) कब्ज (कानष्टीपेसन, Constipation)

"नारियल पानी और तील की बीज
कब्जा रोग की बड़ा इलाज"

पशुओं में कब्ज की रोग या कानष्टीपेसन होता है। क्बज की उपचार के लीए नारियल पानी और तिल की बीज इस्तेमाल किया जाता है।

नारियल पानी में मिनेराल होते हैं। तिल की बीज मैं लाक्जेटिभ् (Laxative), तत्व होता है। ये तत्व पिछल कारक की रुप मैं काम करते हैं। इसमें घृतकुमारी की पत्ता का उपयोग भी होता है। घृतकुमारी की पत्ता की रस में क्राइसोफानीक एसिड (Chrysophanic Acid), एमोड़ीन (Emodin), तत्व रहता है। ये जीवाषु संक्रमण को बंद करता है।)

बीमारी का लक्षण:-

- कब्ज
- खाने पिने में कमी
- दुध उत्पादन में कमी का होना
- चारा खाने के लिए इनकार

बीमारी का कारण:-

- पानी में कमी
- जीवाणु संक्रमण
- खाद्य खाने में अनियमितता

बीमारी का चीकित्सा :-

- घृतकुमारी की रस -१ कप्
- तिल - ५० ग्राम
- नारियल की पानी -२०० मिली

तिल

घृतकुमारी

नारियल

घृतकुमारी की रस की साथ नारियल की पानी मिलाया जाता है। ५० ग्राम् तिल को पीसकर इस में मिला कर पिलाया जाता है। दिन मे एक बार दिया जाता है। ५ दिन तक।

१०) कृमी नाशन (Deworming)

"परजीवी की असली बात
इलाज कराये चिरायता का साथ"

पशुओं की पेट में कृमी या परजीवी एक खतरनाक बिमारी है। कृमी पेट मे रहकर खुन चुसते हैं। खुन चुसने से एनीमीया अथबा रक्तहिनता हो जाता है। पशुओं में अनेक प्रकार कि कृमी पाए जाते है। राउंड़ वार्म, टेपवार्म, हुक वार्म आदि कृमी पाया जाता है। ग्रामांचल में अभी भी पारम्परीक चिकित्सा किया जाता है। कम खर्च में कृमी नाशन किया जा सकता हैं। इस चिकित्सा के अन्तर्गत चिरायता का सफल व्यवहार होता है। चिरायता मै चिरान्टीन (Chirantin), हल्दी मै कुरकमीन् (Curcumin), टरमेरीक आंयल (Turmeric oil), टेरपिनएड्स (Tarpenoids) जैसे तत्व रहते हैं। यह तत्व कृमी नासक के रुप में काम करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- पतला दस्त
- कभी कभी कानसटीपेसन
- बुखार
- शरीर की पिछले अंश मैं दस्त
- चमड़ी रुखा सुखा लगना
- चमड़ी उपर बाल मोटा और खड़े हो जाता हैं
- पेट बाहर आ जाता है
- पशु आहार नही खाता।

बीमारी का कारण:-

- घास चरते समय में मिट्टी से परजीवी प्रवेश करती है।
- राउंड़ वार्म, टेप वार्म और हुक् वार्म आंतनली खुन में चुसते हैं।

बीमारी का चिकित्सा:-

- चीरायता-५० ग्राम
- हल्दी–२० ग्राम
- काली मीर्च - २० ग्राम

चीरायता हल्दी

इन सबको अलग अलग पिस कर के गरम पानी या दुध के साथ मिलाकर एक बार पिलाना चाहिए। हर तीन महीना में एक बार पिलाना चाहिए।

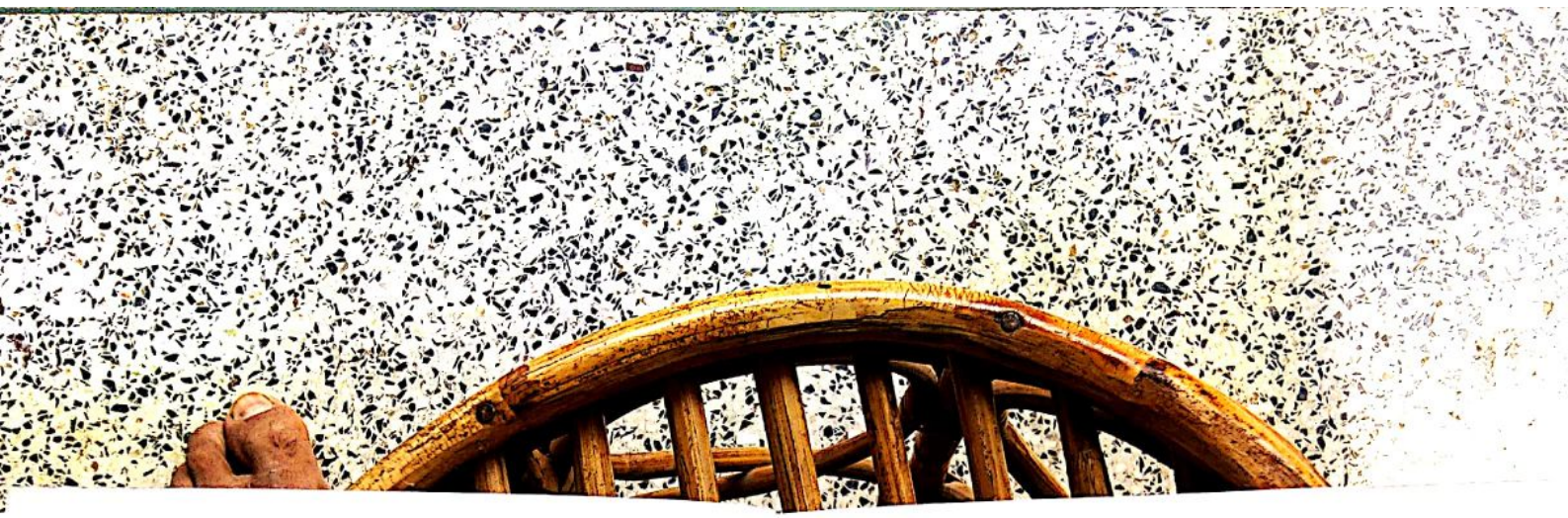

११) कृमी नाशक (Deworming Agent)

"बबुल की बीज कृमी नासक
गाय, बैल की स्वास्थ्य बर्धक"

पालतु पशुओं में कृमी के समस्या दिखाई देता है। कृमी की प्रभाव में शरीर पर असर पड़ता है। पेट की कृमी खुन चुसते हैं। पशु में एनीमीयाँ पाया जाता है। ये सब कृमी, गोल कृमी (Round worm), फीता कृमी (Tape worm) हैं। कृमी नाशन के लिए बबुल के बीज का प्रयोग किया जाता है।

बबुल का पत्ता और बीज में आराबीक एसिड (Arabic Acid), मालीक एसिड (Malic Acid), टानीन (Tanin) तत्व होते हैं। ये तत्व कृमी का नाश करते हैं।

बीमारी का कारण:-

- शुस्त हो जाता है
- चमड़ी रुखा सुखा रहता है।
- दस्त का होना।
- शरीर के उपर बाल खड़े हो जाता है।
- पेट बाहर, खाने की रूचि में कमी

बीमारी का कारण:-

- कृमी
- गाय की चराने के समय में कृमी का संक्रमण

बीमारी का चिकित्सा:-

१०० ग्राम बाबुल बीज पीसें। १०० ग्राम गुड़ के साथ मिलाकर खिलाया जाता है। यह तीन महीने तक काम करता है।

बबुल

बबुल की बिज

१२) कृमी नाशक (Deworming Agent)-2

"कद्दु की बीज में कृमी नासन
गाय, बछड़े की हो संबर्धन"

गाय और बछड़े में कृमी की संक्रमण होता है। गाय और बछड़ी घास खाते हैं। मैदान में चरते हैं। चारा खाने के समय में मिट्टी शरीर को प्रवेश करती है। इसमें कृमी शरीर को संक्रमण करता है।

पारंपरीक रुप से कद्दु की बीज को कृमी नाशन के लिए उपयोग किया जाता है। कदु की बीज में आलकालएड्स जैसे तत्व रहते हैं। ये तत्व कृमी नाशन का काम करते हैं।)

बीमारी का लक्षण:-

- पतला डायरिया, दस्त का हेना
- शरीर दुर्वल हो जाते है।
- खाने की रुचि में कमी।
- चमड़ी रुखा शुखा हो जाना
- चमड़ी का उपर बाल की स्वास्थ्य अच्छा नही।

बीमारी का कारण:-

- मिट्टी खाने से
- दुषित पानी पिने से

बीमारी का चिकित्सा:-

- १०० ग्राम कदु की बीज को पीसें
- १०० मिली पानी में मिलाएं

ये मिश्रण को दिन में दो बार पिलाया जाता है। इसे तीन दिन तक पिलाना चाहिए।

कद्दु

कद्दु की बीज

१२) कालीक (उदरशूल) (Colic)

"पेट में कालीक उठ बस
जल्दी पिलाओ कदम्ब रस।"

पशुओं के पेट में विभिन्न कारण से दर्द होता है। पेट दुखता है। इसको अंग्रेजी में कलिक (Colic) कहा जाता है। पशुओं की कलीक समस्या का चिकित्सा के लिए अभी भी हर्बल उपाय अबलम्बन होता है।

कदम्ब पेड़ की पत्ता या छाल से उपचार किया जा सकता है। कदम्ब की पता में आलकालएड्स (Alkaloids), कादम्बइन (Cadambine), जीरा में रिसीनीन, (Ricinin), टकसआलबुमीन (Toxalbumin) और रिसीन (Ricin) के तत्व होते हैं। ये सब पीड़ा का दमन करते हैं।

कदम्ब

बीमारी का लक्षण:-

- पशु उठ बैठ करता है
- पेट में लात मारता है
- बार बार हम्भा आवाज देती है

बीमारी का कारण:-

- खाने पिने में असुविधा।
- जिवाणु संक्रमण।
- ज्यादा चारा खाने से।

हींग

बीमारी का चिकित्सा:-

- कदम्ब पत्ता या छाल को पिस कर इसका रस निकालना है
- एक ग्लास (२८० एम एल) रस में हींग-चुर्ण २० ग्राम, जीरा चुर्ण-२० ग्राम मिलाकर दिन में एकबार २-३ दिनों के लिए पिलाना चाहीए।

जीरा

१३) पेट में गैस (Gas in stomach)

"हींग, अद्रख काली मीर्च
पेट की गैस को लाओ निच"

गाय, भैंस और पालतु जानवर कि पेट में कभी कभी गैस हो जाता है। जादा आहार खाने से ये गैस हो जाता है। इस गैस को नियंत्रण करने के लिए हींग, अद्रक और काली मीर्च का इस्तेमाल किया जाता है।

अदरख में जींजीबरीन (Gingiverine), जीजींन (Gingene), काली मीर्च मैं पाइपरीन (Piperine), पाइपरीड़ीन (Piperidine) होते हैं। ये तत्व गैस उत्पादन को रुकता है और पेट से गैस को भगाता है।

बीमारी का लक्षण:-

- पेट में सुजन।
- आंख और नाक से पानी।
- श्वांस लेने में कठिनाई।
- पशु में उठ बैठ का होना।
- पेट में लात मारना।

बीमारी का कारण:-

- ज्यादा खाद्य खाने से
- अशुध खाने से
- जीवाणु संक्रमीत बचा हुआ खाद्य खाने से

बीमारी का चिकित्सा:-

- हींग- १० ग्राम
- अद्रख - २५ ग्राम
- काली मीर्च- २० ग्राम
- पीपली- २० ग्राम्
- गुड़- २५ ग्राम

अद्रख

हींग

पीपली

पीपली

गुड़

काली मीर्च

ये सबको अलग अलग पिस् कर पाउड़र या पेष्ट करके सबको मिलाकर दो बार ३ दिनों तक खिलाया जाता है।

१५) बिषाक्त भोजन खाने से

(Food Poisoning, Food Toxicity)

"पेट मैं गोलमाल बिषाक्त वाला
आकड़ा (आक) पत्ता और फल को खीला"

पशु कभी कभी बिषाक्त पदार्थ खा लेते हैं। इससे विषाक्त ह्वे जाते हैं। इसकी इलाज के लिए पशु पालक एक हर्बल उपाय करते हैं। इस इलाज के लिए आकड़ा (आक) के पत्ता *(Calotropis gigantea)* का उपयोग किया जाता है।

आकड़ा (आक) *(Calotropis gigantea)* की पत्ता में मुडारीन (Mudarine), ग्लुकोसाइड (Glucoside), कालोट्रेपीन (Calotropin), युसेनारीन (Usenarine), तत्व रहते हैं। ये तत्व बिषाक्त पदार्थ का नाश करते है।

बीमारी का लक्षण:-

- पेट में गैस
- मुर्छा होना
- कभी कभी मृत्यु

बीमारी की कारण:-

- बिषाक्त पदार्थ खाने से

बीमारी की चिकित्सा:-

दो तीन आकड़ा की पत्ता और कुछ फुल को लेकर पशु को खिला देते हैं। अगर पशु नहीं खाए तो उसको पीस कर खिलाया जाता है। दिन में तीन बार, तीन दिनो तक खिलाया जाता है।

आकड़ा (आक)

१६) पेट में अल्सर (Stomach Ulcer)

"बाँस की पत्ता बड़े चीज की
पेट अलसर में बड़े काम की"

पेट में अल्सर दर्दनाक होता है। अल्सर जल्दी सुखता नही है। पेट में दर्द और दस्त में खुन निकलता है। अल्सर की इलाज के लिए बाँस की पत्ती और दुध को इस्तेमाल किया जाता है।

बाँस की पत्ता में कोलीन (Choline), बीटेन न्युक्लीएज (Biten nuclease), युरीयेज, (Urease), ग्लुकोसाइड़ तत्व (Glucoside) होते हैं। ये सब तत्व अल्सर घाव को सुखाते हैं।

बीमारी की लक्षण:-

- पेट मैं दर्द
- खुनी दस्त
- पेट में लात मारता है

बीमारी की कारण:-

- जीवाणु संक्रमण
- गैस
- एसिड क्षरण

बाँस की पत्ता

बीमारी की चिकित्सा:

५०० ग्राम- बाँस की पत्ता। पेहले बाँस की पता को आच्छी तरह धो देना चाहीए। उसके बाद दो ग्लास गाय की दुध से मिलाकर पीला देते है। दिन में दो बार, ७-१० दिनो तक पिलाया जाता है।

१७) कृमि संक्रमण Worm Infestation

"आज्वाइन और निम की पत्ता
कृमि नाशन में अत्यन्त सस्ता"

गौ-पालन में कृमि संक्रमण को नियंत्रण करना चाहिए। पेट में कृमि की वजह से एनिमिया होता है। इसका चिकित्सा के लिए सबसे सस्ता और सफल कृमिनाशक की आवश्यकता है।

पारंपारिक रुप से आज्वाइन और निम की पत्ता उपयोग करना है। आजवाइन में सीरोपटीन (Searoptin), थाइमिन (Thymene), थाइमल (Thymol) तत्व होते हैं। ये तत्व कृमि नासक होते हैं।)

बीमारी का लक्षण:-

- पतला डायरिया या दस्त।
- रुखा सुखा चमड़ी।
- शरीर की संबर्धन
- दुध में कमी

बीमारी का कारण:-

- कृमि
- मिट्टी खाने से

बीमारी का चिकित्सा:-

- आजवाइन- ५ग्राम
- हीगं की चुर्ण -२ ग्राम
- नीम की पता- दो मुठी भर

आजवाइन

नीम की पत्ता

हींग

पेहले नीम की पता को अछी तरह साफ, धो कर पिस दिया जाता है। उसमें आजवाइन की ५ ग्राम् चुर्ण और २ ग्राम् हींग की चुर्ण मिला कर एक अड़ या बॉल्स को तैयार किया जाता है। तीन महीना में एक बॉल्स को एक बार कृकि नाशन हेतु उपयोग किया जाता है।

२०) भैंस की बछड़े में कृमि (Worm in Buffalo Calve

"भैंस की बछड़ी में गोल कृमी
भीलावा बीज को करो सलामी"

गाय और भैंस दुध देती है। किसान भाई, गाय और भैंस में कृमि संक्रम का इलाज हर्बल उपाय से करते हैं। भीलावा की बीज में आलकालएड़ (Alkaloids), होता है। ये तत्व वायरस नाशक के रुप में काम करते हैं। इस आनाकारड़ीन (Anacardin) का तत्व भी होता है।

बीमारी का लक्षण:-

- दस्त
- दुर्बल शरीर
- एनीमीया या रक्तहीन
- गाय और बछड़ा अक्षम
- रुखा शुखा शरीर

बीमारी का कारण:-

- कृमि
- मिट्टी खाने से

बीमारी का उपचार:-

भीलावा

दो सुखा भीलावा बीज को पिस कर गुड़ के साथ लडु बनाकर खिलाया जाताा। हर महिने में एक बार खिलाया जाता है।

२१) पेट की समस्या (Stomach Problem)

"हींग और जीरा की बनाओ लसी
पेट की बीमारी इलाज अच्छी

पशुओं में पेट की बीमारी दिखाई देता है। पेट में दर्द होता है। इसकी लाज पारम्परीक तरीके से होता है। हींग और जीरा की लसी बनाकर पीलाया ाता है।

हींग में रीसीन (Ricin), जीरा मैं थाइमल (Thymol) और थाइमिन Thymene) जैसे तत्व रहते हैं। ये तत्व पेट की दर्द को बंद करते हैं

ीमारी का लक्षण:-

- पेट में दर्द।
- पशु उठ बैठ करता है।
- पेट में लात मारता है।
- बार बार हम्मा बोबाल करता है।

बीमारी का कारण:-

- जीवाणु संक्रमण
- खाने में गडबड़ी, गैस

बीमारी का चिकित्सा:-

हींग और जीरा को अलग अलग चुर्ण कर के आपस में मिलाना है। दोनो को एक ग्लास गरम दुध या गरम पानी में मिलाकर पिला देने से पेट की दर्द बंद होता है। दिन में दो बार पिलाना चाहिये।

हींग

जीरा

दांत, आंख, नाक, कान के रोग

१) दांत की बीमारी (दांत के मसुड़ो से खुन निकलना, Pus in Dental Pad)

"दांत में दर्द निकले खुन
भीलावा बीज में अनेक धुन्।"

गाय, बैल और भैंस में दांत की बीमारी पाई जाती है। कभी कभी दर्द महसुस भी होता है। दांत के मसुड़े लाल हो जाता है। पशु ठिक् से चारा नहीं खा पाता है। इस बीमारी की चिकित्सा पारम्पारिक उपाय से होता है। भीलावा या मार्कींग नट् ट्री के बीज का इस्तेमाल होता है। मार्कींग नट् की बीज में कारडॉल (Cardol), आनाकारडीक एसिड (Anacardic acid) आदी तत्व रहता है। ये तत्व जिवाणु नाशक और पीड़ा नाशक के रुप में काम करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- दांत हिलने लगता है।
- दांत के मसुड़े से खुन और पस निकलता है।
- पशु चारा खा नहीं पाता है।

बीमारी का कारण:-

- जीवाणु के संक्रमण सें
- बहुत दिनों से जीवाणु के संक्रमण सें

बीमारी का चिकित्सा:-

एक मार्कींगं नट् की बीज या भीलावा को लेकर ३-४ चाम्मच सरसों के तेल मे डुबा कर आग के उपर फ्राय किया जाता है। बीज से तेल निकाल जाता है पांच मिनट के बाद आग से हटा कर तेल को ठंड़ा किया जाता है। हलका गर्म होने पर एक रुइ के साथ दान्त में लगाया जाता है। उस तेल में थोड़ी सी नमक डाला जाता है। इसे दिन में दो बार ५ दिनों तक करने से बीमारी ठीक हो जाती है।

भीलावा

सरसों का तेल

२) नाक से खुन (Nasal Bleeding)

"नाक से खुन जब गिरता
दुब की रस काम ही करता"

पशुओं की नाक से खुन निकलते पाया जाता है। कड़क ठंड़ या गर्मीयों के दिनों में खुन निकलते दिखाई देता है। खुन गिरना बंद नहीं होता । इसकी पारम्परीक चिकित्सा के लिए ग्रामीण इलाको में दुब घास के रस का उपयोग किया जाता है। कभी कभी अजवाइन का भी इस्तेमाल करते हैं।

दुब की घास में आलकालएड्स (Alkaïaids) तत्व उपस्थित रहता है। आजवाइन में सलफर ग्लुकोसाइड़ (Sulpher glucoside), आपिन, भोलाटाईल ऑएल (Volatile oil), आलवुमेन (Albumin), और म्युसीलैज (Mucilage), जैसे तत्व रहते हैं। ये तत्व खुन गिरना बन्द कर देते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- नाक से खुन गीरना।

बीमारी का कारण:-

- कड़क थंड़
- गरमीअें की दीन मैं

बीमारी का चिकित्सा:-

१. दुब घास को लेकर अच्छी तरह से पानी में धोया जाता है। बाद में पीस कर पेष्ट बनाया जाता है। एक कपड़े में पेष्ट को निचोड़ कर रस को नाक में डाला जाता है। रस की २-३ बुंद नाक में डालने से बीमारी ठीक हो जाती है।

दुब

आजवाइन

२. १० ग्राम् अजवाइन को पिसकर एक कपड़ा में गुंठली जैसे बनाया जाता है।

उस गुंठली को गरम पानी मै थोड़ी देर भिगोया जाता है। इस गुंठली से निकला हुआ पानी को नाक में डाला जाता है।

३) आँख का लाल रंग (कंजक्टीबाइटिस, Canjuctivitis)

"आँख मैं दर्द लाल की रंग
धतुरा पत्ता के बनाओ संग"

पशुओं की आँख लाल होना आम बात है । बरसात और ठंड़ की दिनों में ये रोग ज्यादा दिखाई देता है। आँख में एलर्जी जैसे परिस्थिति आ जाता है। आँख का लाल होना कई वजह से होता है। जिवाणु, वायरस के कारण से लाल रंग दिखता हैं। कभी कभी ये एलर्जी की बीमारी हो जाता है। पारंपरीक तौर पर धतुरा पत्ता का इस्तेमाल किया जाता है।

धतुरे के पत्ते में ह्योसीन (Hyosin), आट्रोपीन (Atropine), स्केपोलामाइन (Scepolamine) जैसे तत्व मौजुद रहते हैं। ये सब तत्व जीवाणु नाशक, और प्रदाह विरोधी काम करते है।

बीमारी का कारण:-

- आँख लाल होना।
- आँख से पानी गिरना।
- आँख का पलक बन्द हो जाना।
- आँख का पलक का फुल जाना।
- आँख बाहर को निकल आना।

बीमारी का कारण:-

- जीवाणु
- वायरस
- धुल आखों के अन्दर आ जाना।

- पुष्टी की अभाव।
- एलर्जी के कारण।

बीमारी का चिकित्सा:-

धतुरा

(१) तीन-चार हरा धतुरा पत्ता को अछी तरह धोकर पिसलें। पत्ता के पेष्ट को एक कपड़ा से नीचोड़ कर उसका रस निकाल लें। एक चम्मच रस मे १ चुटकी भर नमक ड़ालकर अच्छे से मिलाएं। इसमें दो तीन बुन्द लेकर ३-८ बार आंख में ड़ाला जाता है।

(२) खलमुड़िया पत्ता को पिसकर उसके रस को भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

खलमुड़िया

४) आँख का लाल होना (Conjuctivits) -2

"आँख में दर्द लाल प्रकार
खलमुड़िया जुस में प्यार"

पशुओं की आँख में दर्द और लाल रंग का हो जाता है। वारीस के दिनों और ठंड के दिनों में ये अक्सर दिखाइ देता है। उस बीमारी की चिकित्सा हर्बल तरीकों में हो सकता है। खलमुड़िया की पत्ता में इसका इलाज कर सकते हैं।

खल मुड़िया की पत्ता मैं एकलीपटीन (Ecliptine), नीकोटीन (Nicotene) जैसे तत्व रहते हैं। ये तत्व पीडा नाशक और आँख की लालिमा को कम कर देता है।

बीमारी का लक्षण:-

- आँख लाल होना
- आँख से पानी नीकलना
- आँख के पलकों का बंद हो जाना

बीमारी का चिकित्सा:-

- खलमुड़िया पत्ता को अछी तरह धो कर पिस ले। पिसने के बाद नीचोड़कर इन लोसन को आँख में २-३ बुंद दिन में दो बार, ५ दिनों के लिए लगाया जाता है।

खलमुड़िया

५) कान में दर्द (ऊटाइटीस, Ootitis)

"कान की व्यथा सोने ना दें
सरसों का तेल उबाल कर दें"

पशुओं की कान में दर्द होता है। कान से मवाद या पस निकलता है। ये पिव बड़ा खतरनाक रुप धारण करती है। पशुओं के कान में कौआ, कोयल बैठ कर पीव साफ करते है। लेकीन इससे राहत नहीं मिलती है। कान की घाव सुखने के लिए हर्बल तरीकों में सरसों का तेल और लहसुन का उपयोग किया जाता है।

सरसों की तेल में माइरोसिन (Myrosine), सीनीग्रीन (Sinigrin), भोलाटाइल आंयल (Voltile oil), ओर ब्रासीक एसिड (Brasic acid) रहता हे। ये तत्व जिवाणु नाशक ओर खुन की प्रसारण बढ़ाता है। लहसुन मैं भोलाटाइल तेल (Volatile oil), म्युसोलेज (Mucilase) की तत्व रहता है। ये भी जीवाणु नासन का काम करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- कान में दर्द का होना।
- दर्द की वजह से कान फड़ फड़ाना।
- कान से घाव की पिव या मवाद निकलना।

बीमारी का कारण:-

- जिवाणु का संक्रमण होने से।
- गंदे पानी में नहाने के कारण।

बीमारी की चिकित्सा:-

- दो चम्मच सरसों तेल को एक बड़ा चम्मच में गर्म करें।

लहसुन

सरसों का तेल

- इसमें तीन से चार लहसुन को ग्रेटीगं करके डाले और फिर गरम करे।
  तेल को थोड़ा सा ठंडा करने के बाद कान में डाले।
  दिन में दो बार, ३ से ४ दिनो तक डालने से रोग ठीक हो जाता है।

प्रजनन संबंधी रोग

१) पशुओं में गर्मी का न आना (आनीष्ट्रस, Anoestrs)

"गाय और भैसं गरम ना आये
जायत्री फल को तब खिलायें"

कभी कभी गाय, भैंस आदि पशु गर्मी (ईस्ट्रस) में नही आते। खाना पिना ठीक् ठाक् चलता है लेकीन इस्ट्रस में नही आते है।

इसलिये पशुओं को जाइफल खिला कर इलाज किया जाता है। जाइफल के उपर छिलका को छीलकर उसके अन्दर बादाम कों चुर्ण करके खिलाया जाता है। जाइफल में माइरिष्टीन (Myrestene) होता है। इसका असर इष्ट्रोजेन के उपर पड़ता है और मादा पशुओं को गर्मी में लाता है।

बीमारी का लक्षण:-

- मादा पशु की उम्र होने के वाबजुद गर्भ धारण नहीं हो पाता।
- सफल् प्रजनन नहीं होता।
- संगम होने के लिये मादा पशु में इच्छा नहीं होना।
- बाहर से ही हुष्टपृष्ट या तंदरुस्त दिखता है। परन्तु प्रजनन नहीं हो पाता।

बीमारी का कारण:-

- हार्मोन की कमी का पाया जाना।
- प्रजनन अंग जैसे गर्भाशय की विकास नहीं होने से, जिवाणु का संक्रमण के कारण।

बीमारी का चिकित्सा:-

- जाइफल के अंदर बदाम को लेकर चूर्ण तैयार किया जाता है।

- उस चुर्ण को केला के अन्दर देकर खिलाया जाता है।
- गाय ओर भैंसे में इससे गरम नहीं आने से, गाय को एक बार और जाइफल खिलाया जाता है।

गरम या इष्ट्रस का लक्षण:-

- पशु द्वारा बार बार पेसाब करना
- अन्य पशु के उपर चढ़ना

जाइफल

केला

- योनी से श्लेष्मिक पदार्थ का निकलना
- पशु द्वारा बार बार रम्भाना करना

२) पशु में गर्मी का ना आना (आनीष्रस, Anoestrus) -2

"गाय और भैंस गरम ना आयें
घृतकुमारी की जुस पिलायें"

कभी कभी गाय, मादा बच्छियां और भैंस गर्मी में नहीं आते हैं। इसके अनेक कारणों में जीवाणु संक्रमणता एक मुख्य कारण होता है। धृतकुमारी की जुस का इस्तेमाल करने से पशु गर्मी में आते है। वैज्ञानिक दृष्टि कोण से धृत कुमारी मे आलोए (Aloe), क्राइसोफानीकएसीड़ (Chrysophanic Acid), होता है। क्राइसोफ्नीक एसिड जीवाणु का विनास करता है। घृतकुमारी की जुस में आलोइन (Aloen), एमोड़ीन (Emodin) आदी तत्व रहता है, जो जीवाणु का विनाश करता है।

बीमारी का लक्षण:

- गाय गरम नहीं हो पाता
- पशु का प्रजनन नहीं हो पाना

बीमारी का कारण:

- जीवाणु संक्रमण

बीमारी का चिकित्सा

- घृतकुमारी की पत्ता को पीस कर उसका रस निकालें।
- उस रस से एक कप को पिलाएं
- एक दिन बाद फिर और एक कप जुस पिलाएं
- इस प्रकार से एक सप्ताह मै तीन बार जुस पिलाया जाता है।
- एक सप्ताह मैं हर दुसरे दिन ये जुस पिलाया जाता है।

बीमारी को दुर करने का विशेष उपाय :-

- घृतकुमारी की एक सप्ताह पिलाने के बाद एक जायत्री के चुर्ण को केला के साथ खिलाने से सफलता मिलती है।

घृतकुमारी

३) गाय का गरम न होना (आनीस्ट्रस, Anoestrus) -3

"गाय की गरम बड़े जरुरी
करी पत्ता का बड़ा आभारी"

गाय का गरम होना बहुत जरुरी होता है। इससे गाय को सांड के साथ क्रोसिंग या कृत्रिम गर्भाधारण, ए.आई (A.I) करना होता है। इससे वंश की वृद्धि होता हैं। कभी कभी गाय गरम में नहीं आती हैं। इसमे हार्मोन की भुमिका होती है। इसलीए करी पत्ता का इस्तेमाल होता है। करी पता में विटामिन ए और इ जैसे तत्व रहते हैं। ये तत्व गरमी या इस्ट्रस लाने में मदद करता है।

बीमारी का लक्षण:-

- गाय का गर्मी नहीं आना।
- गाय का प्रजनन बंद हो जाना।
- बछड़ी का जन्म नहीं होना।

बीमारी का कारण:-

- हार्मोन की कमी
- खाद्य में कमी।

बिमारी का चिकित्सा:-

हर दिन दो मुठ्ठी करी पत्ता (Curry leaves) को खिलाएं। प्रत्येक दिन में एक बार, एक महीना तक खिलाने से गाय गरमी में आ जाती है। और मवैशियों में गर्भाधारण हो सकता है।

करी पत्ता

४) गर्भपात (आबर्सन, Abortion)

"बार बार जब बचा गिरी
घृतकुमारी को लाना जरुरी "

गर्भपात होना एक बड़ी बीमारी है। गाय और भैंस में बार बार गर्भपात होने से पशु की स्वास्थ्य के उपर असर पड़ता है।। पशु की उत्पादक्ता कमी हो जाता है। दुध देना बन्द कर देती है। गर्भपात की अनेक कारणों में से एक कारण है जीवाणु के संक्रमणता का। जिवाणु की वजह से गर्भपात होती है। कभी कभी जीवाणु के कारण पशु की हर्मोन क्षमता में कमी हो जाती है। विशेष रुप से प्रोलाकटीन हर्मोन की कमी हो जाती है। घृतकुमारी मैं आलोज (Aloes), क्राइसोफानीक (Chrysophanic Acid), आलोइन (Aloin), एमोड़ीन (Emodin) आदि तत्व बहुत काम में आते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- गाय और भैंस मैं प्रजनन की बाद, गर्भ में बच्चा रहती है। लेकिन कुछ दिन के बाद गर्भपात हो जाता है।
- सांड या कृत्रिम गर्भाधारण (A.I.) की सफलता के बाद भी गर्भपात होता है।
- कभी कभी कम दिनों में या कुछ देर बाद गर्भपात हो जाता है।
- योनी से श्लैष्मिक पदार्थ का निकलना

बीमारी का कारण:-

- गर्भाशय या युटेरस (Uterus) में जीवाणु संक्रमण
- प्रोजेष्टेरोन हर्मोन (Progesterone Hormone) की कमी होने के कारण

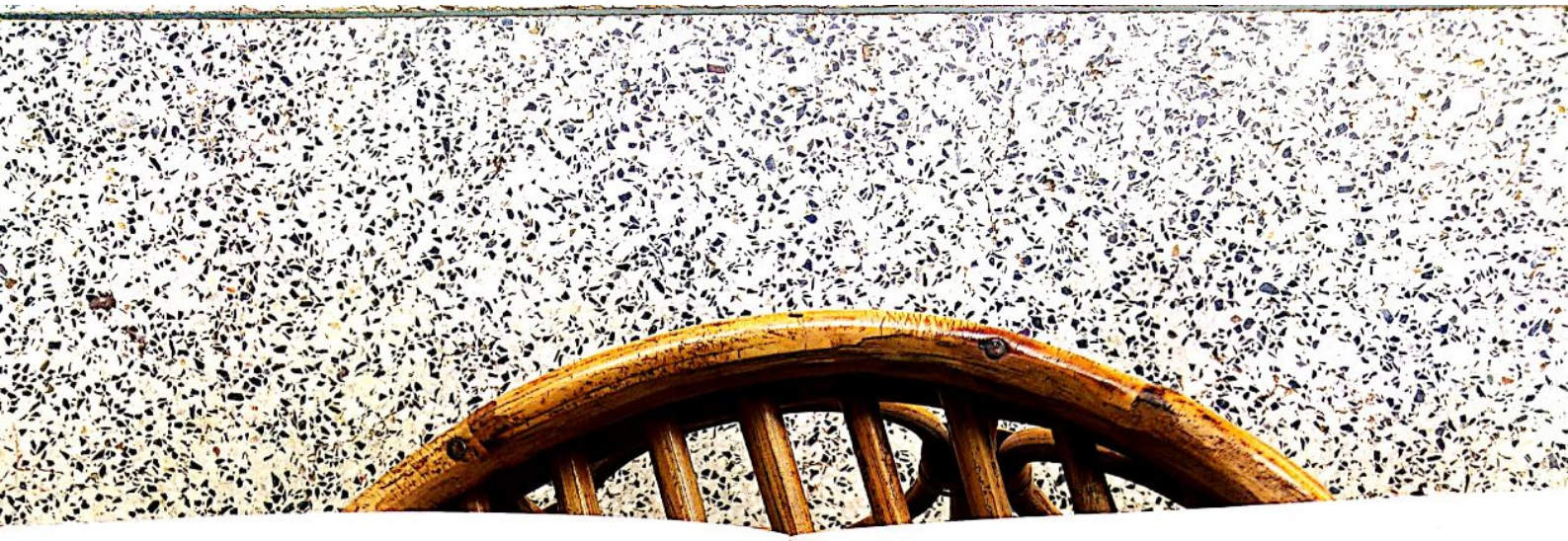

- इस्ट्रोजेन हर्मोन की बढ़ोतरी के कारण।

बीमारी का चिकित्सा:-

- घृतकुमारी की हरा हरा पत्ता को पिसकर उसका जुस निकालें।
- उस जुस को एक कप में लेकर पशु को पिलाये

घृतकुमारी

- एक कप घृतकुमारी जुस हर दिन, एकबार, पांच दिनों तक पिलाए।
- अगले बार जब पशु गरम होगी तब इसकी प्रजनन या कृत्रिम गर्भाधारण से गर्भ रहेगा।

५) गर्भनाल का नहीं गिरना (रीटेनसन प्लोसटां, Retention of Placenta)

"जनम के बाद जब नाल ना गीरे
अमरबेल की काम याद ही करें"

पशु की प्रजनन के आधा घंटा या एक घंटा के अंदर गर्भनाल या प्लासेन्टा गिरना चाहीए। कभी कभी प्लासेन्टा गिरने में देर लगता है। इस परिस्थिति को रिटेनसन ऑफ प्लासेटां बोला जाता है। इससे गर्भाशय में जीवाणु सक्रंमण होता है। गर्भाशय या युटेरस से खुन या लसा निकलती है। इसका पारम्परीक हर्बल चिकित्सा के लिए निर्मुली लता का इस्तेमाल होता है। अमरबेल या कुसकुटा में कुसकुटीन (Cuscutin), फ्लाभानएड (Flavanoid), बीटा सीटोस्टेरोल (Beta Citoserol), और कुमारीन (Cumarin) जैसे तत्व रहता है। ये तत्व गर्भाशय में कम्पन सृष्टि करते हैं। गर्भनाल अपने आप गिर जाती है।

बीमारी का लक्षण:-

- जन्म देने की बाद गर्भनाल या फुल नहीं गिरता है
- पशु चाप में रहती है

बीमारी का कारण:-

- गर्भाशय में कम् कम्पन, संकोचन प्रसारण होने से
- कम् हार्मोन के कारण

बीमारी का चिकित्सा:-

लगभग २८० ग्राम् की अमरबेल (कुसकुटा) को लेकर अछी तरह पिसना है। एक पेष्ट बनाने के बाद पशु को खिलाना चाहिये। आधा घंटा के बाद गर्भनाल गिर जाता है।

अमरबेल

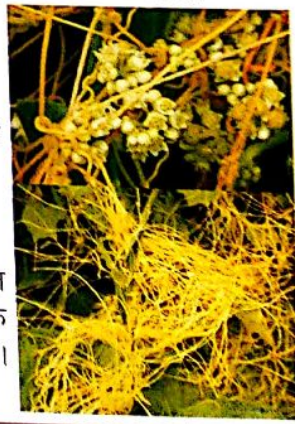

६) गाय की गर्भनाल ना गीरने से (Retention of Placenta) -2

"गाय की नाल जब ना गिरे
राजमा बीज की जुस करें"

गाय जैसे पालतु जानवर की बछड़ा या बछड़ी जन्म के बाद गर्भनाल या प्लासेन्टा गिर जाना चाहिए। करीब १ घंटा की अन्दर अगर नाल ना गिरे तो राजमा या काअे पि की जुस पिलाते हैं। इस मे गुड़ या जागोरी ड़ालकर पिलाते है।

राजमा मे प्रोटीन और फाइटोइरमोन रहते हैं। ये तत्व नाल को गिराने में मदद करता है। ताल की गुड़ या गने की गुड़ शक्तिदायक होते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- बछड़ा या बछड़ी के जन्म के बाद गर्भनाल के गिरने में देरी

बीमारी की कारण:-

- ह्रर्मोन की कमी।
- प्रोटीन में कमी
- शक्तिहिनता

बीमारी का चिकित्सा:-

- राजमा- ५००ग्राम
- तालकी गुड़- १०० ग्राम

पहले ५०० ग्राम् राजमा लेते हैं। उसमें १ लीटर पानी ड़ाल कर आग में उबालते है। पानी के साथ राजमा को अछी तरह मिला कर उसका जुस निकालते है। उस जुस में १०० ग्राम् गुड़ मिलाकर एक वार पिला देना चाहिये। आधा घंटा में गर्भनाल गिर जाती है।

गुड़

राजमा

७) थनैला (मासटाइटिस, Mastitis)

"स्तन मैं दर्द दुध मैं खुन
पान पत्ता शुनाऐं अच्छा सा धुन्।"

गौ माता जन्म देने के बाद दुध क्षरण शुरु करते हैं। बच्चा के लिये माँ का बड़ा उपहार दुध होता है। कभी कभी मिट्टी से जीवाणु संक्रमण हो कर स्तन मे बिमारी फैलता हैं। दुध से खुन भी निकलती है। दुध की रंग रुप बदल जाती है। इसको अँग्रेजी मैं मासटाइश (Mastitis) कहते हैं। मासटाइटिस की पारम्परीक चिकित्सा होता है। एन्टीबायोटिक्स का उपयोग होता है। लेकिन अधिक एन्टीबायोटिक्स भी क्षतिकारक होता है। हर्बल से मासटाइटि की चिकित्सा पान पत्ता और कैष्ट्रॉल आँयल (Castor oil) या अरंड़ी की तेल के साथ किया जाता है।

पान पत्ता मैं पाइपेरीन (Piperine), पाइपेरीड़ीन (Piperidine), तत्व होते हैं। काष्ट्रल आएल मे रीसीनीन (Ricinin), Ricin तत्व होते हैं। ये सब जिवाणु संक्रमण को बन्द करती है।

बीमारी का लक्षण:-

- थन का प्रदाह।
- थन में सुजन।
- थन में गरमी महसुस होना।
- दुध में खुन।
- दुध निकलने में कमी या बंद हो जाना।

बीमारी का कारण:-

- जीवाणु का संक्रमण

बीमारी का चिकित्सा:-

- १० हरा पान पत्ता को पिस करके एक पेस्ट बनाना है

पान पत्ता

अरंड़ी तेल

- कैस्ट्रोल ऑएल से १०० ग्राम लेकर उस में अच्छी तरह मिलाना है। इस पेस्ट से तीन भाग गाय को खिला देना हैं। एक भाग को स्तन के उपर लगा देते हैं।

थनैला (मासटाइटिस्) (Mastitis) -2

"मासटाइटिस की प्रतिशोधक चना अंकुर के काम अनेक"

गाय में मासटाइटिस या थनैला रोग पाया जाता है। थनैला एक क्षतीकारक बिमारी होता है। जीवणु की संक्रमण से, दुध में खुन निकलता है और बदबु भी होता है। दुध खाने लायक नहीं होता है।

पारंपरिक रुप से चना में प्रोटीन और बीटामीन ए और बीटामीन इ तत्व होते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- स्तन की आकार मे वृद्धि, सुजन।
- स्तन मे दुध निकालने से पीड़ा।
- दुध गाड़ा होना।

बीमारी का कारण:-

- जीवाणु का संक्रमण

बीमारी का चिकित्सा:-

२०० ग्राम् चने को लेकर पानी में भिगोया जाता है। चने मे अंकुर आ जाने के बाद जानवर को प्रत्येक दिन एक बार १५ दिनों तक खिलाया जाता है। इससे गाय की स्तन को राहत मिलती है। आगे मास्तटाइस नहीं होता है।

९) गर्भ परीक्षा (Pregnancy Testing)

"गर्भ की परीक्षा मुंग बिज में
सब की भलाई परीक्षण में"

गाय की गर्भ परीक्षा करने के लिए एक सरल उपाय है। इस उपाय के अनुसार मुंग की बीज का इस्तेमाल किया जाता है। गर्भ होने से प्रोजेष्टेरन हार्मोन्‌ की क्षरण शुरु हो जाती है। गर्भ के समय में मुत्र में भिगोया बीज का अंकुरण नहीं होता है। ग्रोथ इनहिबिटीगं फैक्टर (Growth inhibiting factor) काम करता है। जिसे कोई भी आसानी से गर्भधारण की परीक्षा कर सकता है।

परीक्षा :-

- एक काटोरी पानी मैं १०० मुंग को ६ घंटा के लिए भिगोया जाता है। और एक दुसरा कटोरी मैं जीस गाय की गर्भ परीक्षा करना है, उसके पेसाव में १०० मुंग को ६ घंटा तक भिगोया जाता है।
- ६ घंटे की बाद दोना को छान कर अलग अलग कपडा में रखकर अंकुरण किया जाता है।
- ६ घंटा के बाद बीज अंकुरण की गिनती की जाती है।
- केवल पानी में भिगोया मुंग से १०० से ९० या अधीक अंकुर मिलेगा।
- केवल मुत्र में भिगोया मुंग से १०० से अगर १० या कम बिज की अंकुर हो तो पशु गर्भ युकत है। अगर २०, ३० या अधीक अंकुर है तो पशुगर्भ में नहीं है। १०० मे से ० या १० तक अंकुर हो तो गर्म धारण है।

छुत की बिमारी